कुल-गीत

अवध का गौरव बढ़ाता, ज्ञान का यह निलय प्यारा ।
गोमती तट सन्निकट, यह महाविद्यालय हमारा ।।

दीन-दुखियों के दयालु
की मधुर स्मृति पिरोये,
साम्य के एकात्म के
चिरकाल मूल्यों को संजोये,
लक्ष्य-पथ पर अग्रसर, विश्वास का लेकर सहारा।
अवध का गौरव.....।

पुरम् राजाजी अवस्थित
प्रखर गरिमा-पुंज सा,
प्रस्फुटित आलोक चहुँदिश
शान्त सुरभित कुंज सा,
लखनवी तहज़ीब पोषित, है प्रवाहित सृजन धारा।
अवध का गौरव .....।

कला का, विज्ञान का
वाणिज्य का शिक्षायतन
माँ सरस्वती की कृपा से
नित निरन्तर उन्नयन
तुष्ट कर अनहद पिपासा हर रहा यह तिमिर सारा।
अवध का गौरव .....।

ज्ञान की, विज्ञान की
धारा बहे अविरल यहाँ
सौहार्द्र से, सद्भाव से
पूरित रहे परिमल यहाँ
सर्वहित संकल्प लेकर करें हम उद्घोष न्यारा।
अवध का गौरव बढ़ाता ज्ञान का यह निलय प्यारा।।

मुद्रक - Kamla Enterprises ; 9415549938